स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

'मानविकी संकाय' के अंतर्गत 'हिन्दी' विषय में पीएच्.डी. ('विद्यावाचस्पति')
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध की रूपरेखा

''डॉ. विलास गुप्ते के समग्र साहित्य का अनुशीलन''

शोध-छात्रा

वैशाली साहेबराव खोसे

(एम्.ए., एम्.एड्., एम्.फिल.)

अहमदपुर, जि. लातुर

शोध-निर्देशक

डॉ. लावणे विजय भास्कर

(एम्.ए., पीएच्.डी.)

सहायक प्राध्यापक

महात्मा गांधी महाविद्यालय, अहमदपुर, जि. लातुर

संशोधन-केंद्र

दयानंद कला महाविद्यालय, लातुर

अप्रैल- 2019

''डॉ. विलास गुप्ते के समग्र साहित्य का अनुशीलन''

- **भूमिका :**

हिन्दी गद्य की विधाओं के सृजनकर्त्ता मालवांचल तथा इन्दौर के अनमोल रत्न मध्य प्रदेश के अग्रणीय साहित्यकार के रूप में डॉ. विलास गुप्ते जी के गद्य कृतियों का बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने समकालीन जीवनक्षेत्र से सम्बन्धित गद्य की विभिन्न विधाओं के अन्तर्गत साहित्य कृतियों का निर्माण किया है। इनकी रचनाएँ काफ़ी लम्बे समय से विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर प्रकाशित होती रहीं। इनकी लघुकथाएँ, व्यंग्य, नाटक, समीक्षा, शोध, आलेख आदि पाठकों द्वारा सराहे गए हैं। आरंभ में इन्होंने कुछ कविताएँ भी लिखी परन्तु पर्याप्त सफ़लता न प्राप्त होने के कारण काव्य विधा को छोड़कर गद्य की विभिन्न विधाओं को अपनाया जिनमें ऐसी निरझरनी प्रवाहित हुई कि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के निर्झर स्वप्न भंग का उद्वेलन साकार हुआ।

बीसवीं सदी के अन्तिम चार दशकों में गुप्ते जी की कहानियों के सन्दर्भ में समय-समय पर बड़ी मात्रा में टिप्पणियों के रूप में कुछ-न-कुछ अवश्य छपता रहा। जब इनका पहला उपन्यास प्रकाशित हुआ, तब तो आलोचकों का ध्यान इनके उपन्यासों को लेकर हुई विभिन्न गोष्ठियों की ओर बड़ी तेज़ी से आकृष्ट हुआ। जब गुप्ते जी के नाटक प्रकाशित हुए, तब वे न केवल चर्चा के विषय बने बल्कि उनका मंचन भी हुआ तथा सराहना भी हुई। गुप्ते जी को लेकर विभिन्न साहित्यकारों ने उनकी रचनाओं पर विमर्श किया और अपने-अपने आलेख भी प्रस्तुत किये। कहानियाँ, उपन्यास तथा नाटक सराहनीय होते हुए भी गुप्ते जी की कृतियों की आलोचना न के बराबर है या वह पूरी मात्रा में नहीं हुई। इस सन्दर्भ में गुप्ते जी के समकालीन पत्रकार मित्र तथा साहित्यिक सरोजकुमार का मन्तव्य है कि उनकी कृतियों की आलोचना अभी बाकी है।

प्रस्तुत अनुसंधान का प्रधान उद्देश्य है कि गुप्ते जी के समग्र साहित्य का अनुशीलन तथा उनके साहित्यिक व्यक्तित्त्व की पूरी मात्रा में विवेचना हो। साथ-ही-साथ उनके द्वारा लिखी गई विभिन्न कृतियों का चिन्तन किस भूमि पर उपस्थित है? उनके लेखन का उद्देश्य कला के प्रति अधिक समर्पित है या जीवन के प्रति, यह भी जानना है।

डॉ. विलास गुप्ते जी प्रभावशाली एवं प्रयोगशील प्रतिभा के धनि हैं। वे समकालीन साहित्यकारों में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इन्होंने हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं में सर्जना की है। उनका एकमात्र उद्देश्य यह है कि जब तक उन्हें लेखन में संतुष्टि नहीं मिलती तब तक वे साहित्य की विधा से अपने विचार प्रस्तुत करते रहते हैं और जब उन्हें किसी विधा में महत्त्वपूर्ण सफ़लता प्राप्त हुई उसी में वे विचार व्यक्त करने लगते हैं। यही कारण है कि गुप्ते जी कहानीकार, उपन्यासकार तथा नाटककार के रूप में पहचाने जाते हैं। स्वतंत्र तथा अपरम्परावादी ढंग की सोच के कारण वे स्वयं को ज्यादतर न केवल सर्जनात्मक बन सके हैं अपितु सामयिकता से जोड़ भी सके हैं।

डॉ. गुप्ते ने कहानी, उपन्यास तथा नाटक लिखते रहने के साथ-साथ हास्य-व्यंग्य, निबंध एवं समीक्षाएँ भी लिखी है। वे पत्रकार भी थे। उनके शोध-कार्य का विषय 'आधुनिक हिन्दी साहित्य को अहिन्दी लेखकों का योगदान' था। इस शोध-कार्य और उसके पश्चात् उन्होंने जो समीक्षाएँ लिखी, वे उनके चिन्तन तथा दृष्टि को समझने में सहायक है उनकी दृष्टि प्रगतिशीलता एवं मानवता तथा मार्क्सवाद से प्रभावित है। उनकी प्रतिबद्धता व्यक्ति के प्रति न होकर समाज के प्रति है। उनकी साहित्यिक दृष्टि किसी वाद के अन्तर्गत नहीं रखी जा सकती। उनकी रचनाधर्मिता का प्रमुख उद्देश्य सामाजिक विभिन्नताओं का उद्घाटन तथा जीवन्त समस्याओं का समाधान है। गुप्ते जी की कृतियाँ पढ़ते ही ऐसा प्रतीत होता है कि उनके साहित्य का लक्ष्य मानव समाज है। वे जानते हैं कि वर्तमान अर्थप्रधान युग में साहित्यकार अपने कलम के बल पर समाज को नहीं बदल सकता। लेकिन उनका यह भी

विश्वास है कि सही रचनाकार अपने कलम तथा लेखन से समाज में चेतना अवश्य ही ला सकता है। डॉ. गुप्ते के समीक्षाओं से उभरने वाले ऐसे मन्तव्यों को लेकर भी उनकी रचनाओं का अध्ययन करने का प्रयास प्रस्तुत शोध-कार्य में होगा।

ऐसा भी हो सकता है कि समय के साथ-साथ डॉ. विलास गुप्ते जी की रचनाएँ पुरानी हो जाय बल्कि उन्होंने हिन्दी साहित्य जगत् में जो अपना स्थान बनाया है वह सुरक्षित रहेगा। 45 वर्षों से भी अधिक सुदीर्घ साहित्यिक यात्रा के दौरान उनकी यही कोशिश रही कि समाज में फैली हुई या मानव जीवन मूल्यों से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं एवं समाधानों को पाठकों के सामने सरल-सहज, सुव्यवस्थित, सुसंगठित रूप से प्रस्तुत किया जा सकें। समकालीन सोच के सज़ग, समर्थ एवं सफ़ल रचनाकार डॉ. विलास गुप्ते जी के साहित्य की सृजन यात्रा का लेखा-जोखा प्रस्तुत करने का प्रयास प्रस्तुत शोध-कार्य में होगा। प्रस्तुत शोध-कार्य मेरी अपनी क्षमता, समझ, साहित्यानुराग तथा एक प्रकार से मूल्यांकन एवं अनुशीलन करने की चेष्टा का प्रतिरूप होगा।

- **प्रेरणा एवं विषयचयन (Hyopothesis of the Research) :**

कॉलेज जीवन से ही मेरी साहित्य के प्रति रुचि रही है। जैसे-जैसे मैं शिक्षा ग्रहण करती गयी, मेरी यह रुचि बढ़ती गयी। एम्.ए. के पश्चात् डॉ. विलास गुप्ते जी का शोध-ग्रंथ ‘आधुनिक हिन्दी साहित्य को अहिन्दी लेखकों का योगदान’ पढ़ने में आया। तत्पश्चात् मैं उनकी साहित्य-कृतियाँ पढ़ने लगी। डॉ. गुप्ते जी ने स्वयं अहिन्दी भाषी होते हुए भी हिन्दी साहित्य की कहानी, उपन्यास एवं नाटक इन तीनों विधाओं में साहित्य का सृजन कर अपनी अलग-सी पहचान बनायी। उनके साहित्य में आधुनिक समाज का यथार्थ दिखई देता है। साथ ही वे समकालीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, साम्प्रदायिक, आर्थिक एवं पारिवारिक समस्याओं को उज़ागर करते हैं। उनकी कृतियों के माध्यम से वर्तमानकालीन समय एवं समाज का हू-ब-हू अंकन पाठकों के सामने प्रस्तुत होता है। ‘हिन्दी साहित्यकार’ के रूप में

अपनी अलग-सी पहचान स्थापित करने के पश्चात् भी डॉ. गुप्ते जी का साहित्य सराहना तथा पूरी मात्रा के आलोचना से वंचित रहा। इसीलिए मैंने डॉ. विलास गुप्ते के साहित्य को केंद्र में रखकर पीएच्.डी. उपाधि हेतु अनुसंधान करने की ठान ली। श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. विजय भास्कर लावणे जी से इस संदर्भ में निरन्तर चर्चा की और डॉ. गुप्ते जी के साहित्य के प्रति मेरी विशेष रुचि देखकर उन्होंने मुझे **''डॉ. विलास गुप्ते के समग्र साहित्य का अनुशीलन''** इस विषय पर शोध-कार्य करने के लिये स्वीकृति दी तथा प्रस्तुत विषय का चयन किया।

- **अनुसंधान की परिकल्पनाएँ (Hyopothesis of the Research) :**

प्रस्तुत शोध-कार्य के लिये निम्नांकित परिकल्पनाएँ रखी हैं-

1) डॉ. विलास गुप्ते के साहित्य की आलोचना पूरी मात्रा में नहीं हुई है।
2) डॉ. विलास गुप्ते ने समकालीन जीवन क्षेत्र से सम्बन्धित गद्य की विभिन्न विधाओं में कृतियों की सर्जना की।
3) डॉ. विलास गुप्ते की सोच ढंग अपरम्परावादी एवं स्वतंत्र है।
4) डॉ. विलास गुप्ते की रचनाधर्मिता का प्रमुख उद्देश्य सामाजिक विभिन्नताओं का उद्घाटन एवं जीवन्त समस्याओं का समाधान है।

- **अनुसंधान के उद्देश्य (Objectives of the Research) :**

प्रस्तुत शोध-कार्य के निम्नांकित उद्देश्य हैं-

1) डॉ. विलास गुप्ते के साहित्यिक व्यक्तित्त्व की बड़ी मात्रा में विवेचना करना।
2) डॉ. विलास गुप्ते द्वारा लिखी गई विभिन्न कृतियों का चिन्तन किस भूमि पर उपस्थित है, यह जानना।
3) डॉ. विलास गुप्ते के लेखन का उद्देश्य कला के प्रति अधिक समर्पित है या जीवन के प्रति, यह जानना।
4) डॉ. विलास गुप्ते की कहानियों का अनुशीलन करना।

5) डॉ. विलास गुप्ते के उपन्यासों का अनुशीलन करना।

6) डॉ. विलास गुप्ते के नाटकों का अनुशीलन करना।

7) डॉ. विलास गुप्ते के साहित्य में चित्रित समकालीन परिदृश्य एवं समस्याओं का अनुशीलन करना।

8) डॉ. विलास गुप्ते के साहित्य का शिल्पगत अनुशीलन करना।

- **अनुसंधान की उपयोगिता (Importance of the Research) :**

डॉ. विलास गुप्ते के साहित्य पर पीएच्.डी. उपाधि हेतु आज तक उचित रूप से कोई शोध-कार्य नहीं हुआ है। उनके साहित्य की सही मात्रा में आलोचना नहीं हुई है। अहिन्दी भाषी होते हुए भी डॉ. विलास गुप्ते जी ने समकालीन हिन्दी कहानी, उपन्यास तथा नाटक इन तीनों विधाओं में हिन्दी साहित्य को अपना योगदान देते हुए अपना स्वतंत्र स्थान बनाया है। प्रभाकर माचवे, डॉ. शंकर पुणतांबेकर, माधव सप्रे, गजानन माधव मुक्तिबोध जैसे साहित्यकारों ने अहिन्दी अर्थात् मराठी भाषी होते हुए भी उन्हें हिन्दी साहित्य जगत् में जिस मात्रा में सराहा एवं नवाज़ा गया, उस मात्रा में अन्य अहिन्दी भाषी क्षेत्र के रचनाकारों को क्यों सराहा तथा नवाज़ा नहीं गया, यह जानने का प्रयास भी प्रस्तुत शोध-कार्य में होगा। इस कारण डॉ. गुप्ते जी के समग्र साहित्य का अनुशीलन कर उचित रूप से आलोचना करने का प्रयास होगा जो उपेक्षित साहित्यकारों के साहित्य पर शोध-कार्य करने वाले अनुसंधाताओं को सहायक होगा।

- **अनुसंधान पद्धतियाँ (Research Methods) :**

प्रस्तुत शोध-कार्य के लिये विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक तथा वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धतियाँ अपनायी जायेगी।

- **अध्याय-विभाज़न (Chapterization) :**

प्रस्तुत शोध-कार्य का अध्याय-विभाजन निम्न प्रकार होगा-

प्रथम अध्याय	:	डॉ. विलास गुप्ते का व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व
द्वीतिय अध्याय	:	गद्य विधाओं की अवधारणा एवं विकास
तृतिय अध्याय	:	डॉ. विलास गुप्ते की कहानियों का अनुशीलन
चतुर्थ अध्याय	:	डॉ. विलास गुप्ते के उपन्यासों का अनुशीलन
पंचम अध्याय	:	डॉ. विलास गुप्ते के नाटकों का अनुशीलन
षष्ठ अध्याय	:	डॉ. विलास गुप्ते के साहित्य का शिल्पगत अध्ययन
सप्तम अध्याय	:	उपसंहार एवं उपलब्धियाँ

(प्रस्तुत शोध-कार्य के दौरान मूलग्रंथों की उपलब्धता एवं समय की सीमा पर ध्यान रखते हुए अध्याय-विभाज़न में परिवर्तन की सम्भावना है।)

अ) डॉ. विलास गुप्ते के मूल ग्रंथ :

- **कहानी-संग्रह**

1) राजा नंगा है : नया भारत प्रकाशन, इन्दौर, प्रथम संस्करण 1970

2) आख़िरी हथियार : भाषा-भारती प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1980

3) बिना पहिये का रथ : सन्मार्ग प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1997

4) अंधेरा फेंकने वाला टॉर्च : ज्ञान भारती प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2000

5) पन्नालाल के जूते : शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2010

- **उपन्यास**

1) **हजार हाथों वाला आदमी** : राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1986

2) **शेष आख़िरी पृष्ठ पर** : भाषा-भारती प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1980

- **नाटक**

1) **आदमी का गोश्त** : भाषा-भारती प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1983

2) **आप के कर कमलों से** : अभिव्यंजना प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1987

3) अवतार कथा

4) नरक-गाथा : 'वसुधा', त्रैमासिक पत्रिका

5) **पिशाच-विद्या** : 'छायानट', त्रैमासिक पत्रिका, लखनऊ

- **शोध-ग्रंथ**

2) आधुनिक हिन्दी साहित्य को
अहिन्दी लेखकों का योगदान : नवनीत प्रकाशन, मुम्बई,
प्रथम संस्करण 1973

- **हास्य-व्यंग्य**

1) कहानी का सातवाँ तत्व : साप्ताहिक हिंदुस्तान, नयी दिल्ली

2) एक प्रेम कथा

3) दूसरों की गुठलियाँ अपना आंगन

4) हिन्दी के प्रोफेसर

5) बीरबल की मूँछें

6) चश्मे की माफ़ी : रंग चकल्लूस, अप्रैल-जून 1974

7) कुछ पन्नें एक शिक्षक की डायरी के

8) पैसठवी कला

9) दरवाजे पर खड़ा हाथी

- **निबंध**

1) **कटघरे में खड़ी नाट्य-भाषा :** त्रैमासिक नटरंग, नयी दिल्ली

2) **जर्दा और विश्व शांति की योजना**

3) **लोकप्रिय कविता और**

कविता की लोकप्रियता : मध्य प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन विवरणिका, अक्टूबर

4) एक संघर्ष निरन्तर

- **पुस्तक-समीक्षा**

1) निरर्थक कहानियों का आकर्षण : नई दुनिया, इन्दौर

आ) संदर्भग्रंथ सूची :

1) समकालीन हिन्दी कहानी : डॉ. पुष्पपाल सिंह

2) **नयी कहानी की भूमिका :** कमलेश्वर

3) हिन्दी कहानी – एक अंतर्यात्रा : डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ

4) **साठोत्तरी हिन्दी कहानी :** जितेंद्र वत्स

5) **व्यक्ति चेतना और स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास :** डॉ. पुरुषोत्तम दुबे

6) **अधूरे साक्षात्कार :** डॉ. नेमीचंद जैन

7) **नये उपन्यासों में नये प्रयोग :** डॉ. दंगल झाल्टे

8) आधुनिक हिंदी नाटक (एक यात्रा दशक) : नरनारायण राय

9) **शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त :** गोविंद त्रिगुणायत

10) **समकालीन सोच के समर्थ रचनाकार डॉ. विलास गुप्ते इस सफ़र में... :** सम्पादक डॉ. रमेश सोनी, नवराज प्रकाशन, भजनपुरा, दिल्ली

स्थान :

दि. :

शोध-छात्रा
वैशाली साहेबराव खोसे
(एम्.ए., एम्.एड्., एम.फिल.)
अहमदपूर, जि. लातुर

शोध-निर्देशक
डॉ. लावणे विजय भास्कर
(एम्.ए., पीएच्.डी.)
सहायक प्राध्यापक
महात्मा गांधी महाविद्यालय, अहमदपूर, जि. लातुर